Q. राजनीतिक आधुनिकीकरण को परिभाषित करें तथा इसके प्रमुख प्रतिमानों का उल्लेख करें (Discuss Pol. Modernization and discuss its different Patterns.)

राजनीतिक संरचनाओं तथा राजनीतिक मूल्यों में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। एशिया तथा अफ्रीका के नये राज्यों के उदय से तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के क्षेत्र में नये उपागम जुड़े तथा नयी प्रवृत्तियाँ पनपीं। इस प्रकार के परिवर्तनों तथा नये आयामों के परिवर्तन के फलस्वरूप राजनीतिशास्त्रियों ने महसूस किया कि व्यवस्था-विश्लेषण तथा संरचनात्मक - कार्यात्मक ~~[illegible]~~ उपागम के द्वारा राजनीतिक व्यवस्थाओं की गत्यात्मक शक्तियों को समझने के सहायक अनेक तत्त्व छूट जाते हैं। अनेक विद्वान यह मानते हैं कि राजनीतिक व्यवस्थाओं को राजनीतिक आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में देखने से राजनीतिक व्यवहार की वास्तविक गत्यात्मक शक्तियों का अधिकतम पहचान हो जाता है। अतः आज राजनीतिक प्रक्रियाओं को आधुनिकीकरण के समग्रतावादी संदर्भ में समझने के लिये आवश्यक माना जाता है।

राजनीतिक आधुनिकीकरण को समझने के लिए आधुनिकीकरण के अर्थ को समझ लेना आवश्यक है। विद्वानों का मत है कि आधुनिकीकरण को परिभाषित करना कठिन है। क्लाउड वेल्च (Claude Welch) के मतानुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो साधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर आधृत होती है। और आधुनिक समाज की स्थापना के उद्देश्य से युक्त होती है। "लर्नर ने आधुनिकीकरण ~~आयाम~~ "को विवेकपूर्ण परिवर्तन की प्रक्रिया" कहा है।

सामान्यतः आधुनिकीकरण और पाश्चात्यीकरण को एक ही माना जाता है। ~~[illegible]~~ लेकिन पाश्चात्यीकरण निःसंदेह आधुनिकीकरण नहीं है। जबकि आधुनिकीकरण मूल्य मुक्त अवधारणा है। सैमुअल हंटिंगटन (Samuel Huntington) के मतानुसार "आधुनिकीकरण एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है, जो आर्थिक विकास तथा भौतिक ~~प्रक्रिया के~~ प्रगति के मूल मत परिवर्तन लाता है।"

राजनीतिक आधुनिकीकरण को परिभाषित करना कठिन है। जेम्स कोलमैन (James Coleman) के अनुसार "राजनीतिक आधुनिकीकरण ऐसे संस्थागत ढाँचे का विकास है जो लचीला और इतना शक्तिशाली हो कि इससे उत्पन्न होने वाली माँगों का मुकाबला कर सके", अधिकांश विद्वानों का मत है कि आधुनिकीकरण को औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्राविधिक विकास, शिक्षा व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक विकास तथा संचार साधनों के अंश सम्बद्ध तत्वों को देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक आधुनिकीकरण की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं।

1. राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषता शासन व शक्तियों का अत्यधिक विकेन्द्रीकरण

2. राजनीतिक आधुनिकीकरण का प्रमुख लक्षण यह है कि इसके अन्तर्गत सामाजिक नीति में राज्य का अधिकाधिक प्रवेश हो जाता है। केन्द्र और स्थानों के बीच अंतःक्रिया बढ़ जाती है।

3. इसके अन्तर्गत सत्ता के परम्परागत स्रोत कमजोर हो जाते हैं क्योंकि इसके अन्तर्गत, परम्परागत, पारिवारिक और जातीय सत्ता का स्थान राष्ट्रीय सत्ता द्वारा ले लिया जाता है।

4. राजनीतिक संस्थाओं का विभिन्नीकरण का विशेषीकरण आधुनिक राज व्यवस्था में आवश्यक हैं इसलिए इसे राजनीतिक आधुनिकीकरण की विशेषता कही जा सकती है।

5. राजनीति में बढ़ती सहभागिता भी राजनीतिक आधुनिकीकरण की पहचान है। क्योंकि विद्वानों के मतानुसार राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं में जनसहभागिता कितनी है। राजनीतिक आधुनिकीकरण का यह महत्वपूर्ण मापक है।

6. नागरिकों का राजनीतिक व्यवस्था के साथ अधिक से अधिक तादात्मीकरण राजनीतिक आधुनिकीकरण का प्रतीक कहा जाता है। कई विद्वानों के मतानुसार यह राजनीतिक आधुनिकीकरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।

7. राजनीतिक व्यवस्थाओं में कार्यों की वृद्धि एवं विस्तार के फलस्वरूप न केवल नौकरशाही के आकार का विस्तार हुआ है वरन उसका आधार भी व्यापक हुआ है। अतः व्यापक आधारवाली नौकरशाही राजनीतिक आधुनिकीकरण की एक मुख्य विशेषता कही जा सकती है।

राजनीतिक आधुनिकीकरण के प्रतिमान :— राजनीतिक (Standard of Political Modernization) प्रतिमानों के संबंध में दो बातें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

1. राजनीतिक आधुनिकीकरण का कोई सर्वव्यापी प्रतिमान नहीं है।
2. राजनीतिक आधुनिकीकरण एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है।

आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं को मोटे तौर पर दो वर्गों में बांटा गया है। लोकतंत्र और वर्गतंत्र। शील्स ने कुल मिलाकर राजनीतिक व्यवस्था के पांच प्रकारों का वर्णन किया है।

1. राजनीतिक लोकतंत्र :— शील्स के अनुसार "राजनीतिक लोकतंत्र प्रतिनिधि-संस्थाओं तथा सार्वजनिक स्वतंत्रताओं पर, पूरी तरह नागरिक शासन है।" यह सर्वोत्तम राजनीतिक व्यवस्था है और यह ग्रेट ब्रिटेन तथा अमेरिका में पायी जाती है।

Scanned with CamScanner

(2) अभिभावकी लोकतंत्र :— इस व्यवस्था की मुख्य विशेषता लोकतंत्र के मूल्यों एवं मान्यताओं के प्रति प्रतिबद्धता है। इस प्रकार की व्यवस्था में वास्तविक शक्तियाँ कार्यपालिका में निहित रहती हैं तथा कार्यपालिका विधायिका के नियंत्रण में कार्य करती है। इसके अन्तर्गत विरोध की भूमिका सीमित रहती है। तथा सक्षम एवं प्रतिबद्ध नौकरशाही की व्यवस्था रहती है।

(3) आधुनिकी वर्गतंत्र — यह व्यवस्था आधुनिकीकरण (Modernising Oligarchy) की ओर अग्रसर होती है। इसके अन्तर्गत। इसके अन्तर्गत सत्ता या तो असैनिक अधिकारियों के हाथ में होती है या सैनिक अधिकारियों के हाथों में, जो शासन संचालन में अधिक से अधिक सफलताएँ प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं। इसके राजनीतिक दलों पर प्रतिबन्ध रहता है। तथा विपक्ष का अस्तित्व नहीं रहता है।

(4) सर्वाधिकारी वर्गतंत्र :— पाश्चात्य चिन्तकों के लेखों द्वारा (Totalitarian Oligarchy) सर्वाधिकारवादी शासन व्यवस्था को सर्वाधिकारवादी वर्गतंत्र व्यवस्था कहा जाता है। इटली की फासीवादी व्यवस्था, जर्मनी की नाजीवादी व्यवस्था तथा साम्यवादी देशों का एक दलीय व्यवस्था सर्वाधिकारवादी वर्गतंत्र के उदाहरण हैं। इसके अन्तर्गत शासककर्ता के हाथों में सत्ता का पूर्ण केन्द्रीकरण रहता है। तथा सरकार की एक विशेष विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता रहती है।

(5) परंपरागत वर्गतंत्र — परंपरागत वर्गतंत्र वह व्यवस्था है (Traditional Oligarchy) जिसके अन्तर्गत शासकीय सत्ता एक निश्चित प्रकार के शासक तथा शासकों में निहित रहती है। इसके अन्तर्गत शासक वंशपरम्परागत होते हैं। जिसका आधार रक्त सम्बन्ध होता है। विधायिका का स्थान गौण होता है। तथा सक्षम तथा कुशल नौकरशाही का अभाव होता है। व्यवस्था की अनुदारशीलता तथा जनमत की उपेक्षा भी इस प्रकार की व्यवस्था की प्रमुख विशेषता है।

मूल्यांकन (Evaluation) — राजनीतिक आधुनिकीकरण की कुछ विशेषताएँ भी हैं और कुछ कमजोरियाँ भी हैं। इसकी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक पृथक एवं स्वतंत्र प्रक्रिया के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पायी है। राजनीतिक आधुनिकीकरण ने अपनी कमजोरी के कारण ही राजनीति-शास्त्र को एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में प्रतिस्थापित न कर इसे एक आश्रित परिवर्त्य का रूप दे डाला है।

इन सीमाओं एवं कमजोरियों के अतिरिक्त राजनीतिक आधुनिकीकरण की कुछ सीमाएँ और कमजोरियाँ भी गिनाते हैं जिनसे राजनीतिक विकास ग्रस्त है। किन्तु इन सीमाओं एवं कमजोरियों के

उपर्युक्त राजनीतिक आधुनिकीकरण पर आपत्तियाँ उठायी जाती हैं।